

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, क्राइस्टोलॉजी, सत्र 1, परिचय अवलोकन

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन हैं जो क्राइस्टोलॉजी पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 1, परिचय अवलोकन है।

आपका स्वागत है, मैं रॉबर्ट पीटरसन हूँ। दो इवेंजेलिकल सेमिनारियों में 35 वर्षों तक व्यवस्थित धर्मशास्त्र पढ़ाने के बाद, मैं पाँच वर्ष पहले सेवानिवृत्त हो गया और अभी भी सक्रिय हूँ, अंशकालिक, लेखन और संपादन कर रहा हूँ। क्राइस्टोलॉजी पर हमारे पाठ्यक्रम में आपका स्वागत है, और शुरू करने से पहले ही प्रार्थना करें।

दयालु पिता, आपके वचन के लिए धन्यवाद, अपने आप को हमारे सामने प्रकट करने के लिए। धन्यवाद कि आपका वचन आपके बेटे पर केंद्रित है। हमें उसके बारे में सिखाएँ, हम प्रार्थना करते हैं, और हम उसके अपने पवित्र नाम में प्रार्थना करते हैं। आमीन।

हमारे पाठ्यक्रम का अवलोकन। हम परिचय से शुरू करते हैं, कुछ शब्दों को परिभाषित करते हैं, रहस्य की अवधारणा के बारे में बात करते हैं, जिनमें से मसीह का व्यक्तित्व पवित्रशास्त्र में दो बड़े लोगों में से एक है, और फिर व्यवस्थित धर्मशास्त्र की कुछ ताकत और कमजोरियों के बारे में बात करते हैं। फिर, मसीह के सिद्धांत की हमारी समझ की जड़ों को शुरुआती चर्च में खोजते हुए, हम कई व्याख्यानों के लिए पैट्रिस्टिक क्राइस्टोलॉजी के साथ काम करेंगे, जिसका समापन 325 में निकिया की परिषद में महान कथन में होगा, जिसने स्पष्ट रूप से मसीह के देवता की पुष्टि की, और फिर 451 में चार्ल्सडन की महान क्राइस्टोलॉजिकल परिषद, जो मसीह के एक व्यक्ति के बारे में चर्च की श्रमसाध्य समझ का परिणाम थी, जो अपने अवतार में और हमेशा के लिए दो स्वभाव रखता है।

और फिर, भविष्य के व्याख्यानों में, आधुनिक क्राइस्टोलॉजी को 18वीं शताब्दी के ज्ञानोदय से लेकर हमारे समय तक खोजा जाएगा, और जैसा कि हम देखेंगे, तब प्रारंभिक चर्च से क्या अलग दृष्टिकोण अपनाया गया था। और फिर, अंत में, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर आधारित व्यवस्थित धर्मशास्त्र, और यहाँ हम चार महान अंशों पर ध्यान केंद्रित करेंगे, और मैं उन्हें मसीह के व्यक्तित्व के महत्वपूर्ण सिद्धांतों के साथ जोड़ना चाहता था। तो, यूहन्ना 1 और अवतार, इब्रानियों 1 और हमारे प्रभु का ईश्वरत्व, कुलुस्सियों 1 और उनकी मानवता, भी उनके ईश्वरत्व के अध्ययन का स्रोत हो सकते थे; इसमें दोनों शामिल हैं, बेशक।

हम मसीह की एकता का अध्ययन करेंगे, लेकिन फिर चौथा महान अंश फिलिप्पियों 2 है, और वह टेक्स्टस क्लासिकस है, मसीह की दो अवस्थाओं, अपमान की अवस्था और उत्कर्ष की अवस्था का शास्त्रीय पाठ। परिचय: सबसे पहले, मुझे कम से कम कुछ व्यवस्थित शब्दों को परिभाषित करने दें जिनका उपयोग हम भविष्य के व्याख्यानों में करेंगे। पूर्व-अस्तित्व का अर्थ है

कि यद्यपि यीशु की मानवता बेथलेहम में मरियम के गर्भ में शुरू हुई, वह, त्रिदेव के दूसरे व्यक्ति के रूप में, अनंत काल तक अस्तित्व में रहा।

वह अपने मानव अस्तित्व से पहले ईश्वर पुत्र के रूप में मौजूद था। अवतार वह शब्द है जिसका उपयोग हम इस तथ्य के बारे में बात करने के लिए करते हैं कि शाश्वत, सर्वशक्तिमान ईश्वर नासरत के यीशु में एक मानव बन गया। यह एक महान चमत्कार है, और ईश्वर ने कुंवारी गर्भाधान के साधनों का उपयोग किया, जिसे पारंपरिक रूप से कुंवारी जन्म कहा जाता है।

तकनीकी रूप से, हमारे प्रभु का जन्म सामान्य था। गर्भाधान अलौकिक था, और इसे ही हम कुंवारी जन्म कहते हैं; हमारा वास्तव में मतलब कुंवारी गर्भाधान से है, कि पवित्र आत्मा ने यीशु को उसकी माँ मरियम के गर्भ में गर्भ धारण करवाया। अवतार के परिणामस्वरूप, हम मसीह के ईश्वरत्व की श्रेणियों को देखेंगे, कि वह पूरी तरह से ईश्वर है, पिता और पवित्र आत्मा से अलग फिर भी उनके बराबर है, और अवतार के परिणामस्वरूप, वह अब पूरी तरह से मनुष्य है।

हम अध्ययन करेंगे कि उनकी मानवता एक उपेक्षित पहलू है। हम उदारवादी और पंथवादी इनकारों के खिलाफ उनके देवता का बचाव सही ढंग से करते हैं। हम गलत तरीके से उनकी मानवता पर कम ज़ोर देते हैं, मानो इस बात पर ज़ोर देना कि किसी तरह उनके देवता पर अतिक्रमण हो रहा है।

ऐसा नहीं है। दोनों ही उसके व्यक्तित्व के लिए आवश्यक हैं और जैसा कि हम देखेंगे, दोनों ही उसके उद्धार कार्य के लिए आवश्यक हैं। व्यक्ति की एकता को ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के प्रकाश में सबसे अच्छी तरह से समझा जा सकता है, जिसे हम आज से शुरू करेंगे, अगर भगवान चाहें।

वह एक व्यक्ति है, हमेशा दो स्वभावों वाला एक सच्चा अवतार। दो राज्यों का सिद्धांत सुधार के बाद की समझ है; हालाँकि सुधारकों ने उस भाषा का उपयोग नहीं किया, लेकिन वे यीशु की अवधारणाओं को समझते थे। स्वर्ग में अब यीशु पृथ्वी पर यीशु से कैसे भिन्न है? इसका उत्तर यह नहीं है कि वह अब मनुष्य नहीं है; यह एक आम गलतफहमी या गलत धारणा है। इसका उत्तर दो राज्यों के सिद्धांत में पाया जाता है।

गर्भाधान से लेकर दफ़न तक उसकी अपमान की स्थिति ही सब कुछ है। परमेश्वर के पुत्र का दफ़न होना कितना दुखद है। ज़रा सोचिए।

यह हमारे पाप का एक भयानक अभियोग है कि हमें बचाने के लिए उसे वैसे भी दफनाए जाने की आवश्यकता थी। उसकी उत्कर्ष की स्थिति उसके पुनरुत्थान से लेकर उसके दूसरे आगमन तक सब कुछ है। वह एक ही व्यक्ति है, लेकिन उसका जीवन उन दो अवस्थाओं में बहुत अलग तरीके से जीया जाता है।

उन बुनियादी धार्मिक शब्दों को परिभाषित करने के बाद अपने परिचय को जारी रखते हुए, मैं रहस्य की अवधारणा के बारे में बात करना चाहता हूँ क्योंकि ईसाई धर्म में दो महान रहस्य हैं। एक है त्रिदेव का सिद्धांत, और दूसरा है मसीह के व्यक्तित्व में दो प्रकृतियों का सिद्धांत। मैं रहस्य

को ईश्वर द्वारा प्रकट विरोधाभास, विरोधाभास, रहस्य के रूप में परिभाषित करूँगा जिसे हम आंशिक रूप से समझ सकते हैं लेकिन फिर यह मानवीय तर्क से परे है।

यहाँ मुख्य बात यह है कि यह ईश्वरीय रूप से प्रकट है। बाइबल स्पष्ट रूप से सिखाती है कि दोनों नियमों में एक ईश्वर है। अवतार में, हम अंततः उसके पुनरुत्थान के बाद सीखते हैं कि पुत्र भी ईश्वर है, और पिन्तेकुस्त हमें दिखाता है कि पवित्र आत्मा भी ईश्वर है। इस प्रकार, एक ईश्वर है जो अनंत काल तक तीन व्यक्तियों में विद्यमान रहता है।

तीनों व्यक्ति अविभाज्य हैं, और फिर भी उन्हें अलग-अलग पहचाना जाना चाहिए। इसके अलावा, वे महिमा, शक्ति और ईश्वरत्व में समान हैं। और बाइबल के अनुसार एक और निहितार्थ यह है कि तीनों व्यक्ति परस्पर एक दूसरे में निवास करते हैं।

ईश्वर एक ही समय में तीन में से एक कैसे हो सकता है, इसका उत्तर आंशिक रूप से दार्शनिक और धार्मिक श्रेणियों से लिया जा सकता है। त्रित्व और एकत्व एक ही संबंध में नहीं हैं; यह ठीक है, यह सच है, और फिर भी, दिन के अंत में, हम पूरी तरह से समझ नहीं सकते हैं। और फिर भी हम इसका सामना करते हैं, और या तो इसे नकारने में समाप्त होते हैं या एक तरफ त्रिदेववाद में, कई ईश्वर, जो बेतुका है, या व्यक्तियों को भ्रमित करना, या पुत्र के देवत्व को नकारना, या पवित्र आत्मा के व्यक्तित्व को नकारना, यह दूसरी तरफ भी उतना ही बुरा है।

तो यहाँ एक दिव्य रहस्य प्रकट हुआ है। ईश्वर एक में तीन हैं। टर्टुलियन के शब्दों का उपयोग करें तो, यह बात अटक गई है।

वह एक त्रिमूर्ति है, एक त्रिमूर्ति, एक में तीन। ईश्वर द्वारा प्रकट किया गया दूसरा बड़ा रहस्य यह है कि ईश्वर का पुत्र, अपने अवतार के बाद, दो प्रकृतियों में एक व्यक्ति है। चरनी में बच्चा ईश्वर है।

मरियम के गर्भ में पल रहा बच्चा ईश्वर है। हम इसे कैसे समझ सकते हैं? केवल आंशिक रूप से। हम चर्च के काम के उस हिस्से को उसके इतिहास में देखेंगे और पवित्रशास्त्र की सच्चाइयों से जूझते हुए, खास तौर पर गलतियों के खिलाफ देखेंगे।

हम एक पल में यह कहने जा रहे हैं कि त्रित्ववादी धर्मशास्त्र के रूप में क्राइस्टोलॉजी का अधिकांश हिस्सा विवाद का धर्मशास्त्र है, जो रूढ़िवादी लोगों के बीच प्रतिस्पर्धा, हमलों और विधर्म के प्रकाश में ईश्वर की शिक्षा को समझने के संघर्षों के बीच गढ़ा गया है। लेकिन अंततः, यह रहस्यमय है कि यह व्यक्ति एक ही समय में ईश्वर और मनुष्य दोनों है। कि वह सब कुछ जानता है, जैसा कि उसके शिष्य अंततः स्वीकार करते हैं।

अब हम जानते हैं कि तुम सब कुछ जानते हो और तुम्हें किसी की शिक्षा की आवश्यकता नहीं है, वे ऊपरी कमरे के प्रवचनों में कहते हैं। लेकिन यीशु ने खुद कहा कि कोई भी उसके लौटने का समय नहीं जानता, यहाँ तक कि पुत्र भी नहीं। इसे तुरंत स्पष्ट करने के लिए, उसने यह बात धरती पर रहते हुए अपमान की स्थिति में कही थी।

और हम बाद में इस पर बहस करेंगे। उसके पास अपनी सारी दिव्य शक्तियाँ हैं। वह उनमें से किसी को भी नहीं खोता।

इसे केनोसिस धर्मशास्त्र या केनोटिक धर्मशास्त्र कहा जाता है। उनके पास ये सब पूरी तरह से है। वे इन्हें छोड़ते नहीं हैं।

लेकिन वह बार-बार जो स्वीकार करता है, वह है उनका स्वतंत्र उपयोग। वह पिता की इच्छा के विरुद्ध अपनी शक्तियों का उपयोग करने से इनकार करता है। वह ऐसा नहीं करेगा।

तो, क्या उसके पास सब कुछ जानने की क्षमता थी? हाँ। क्या उसने कभी-कभी अपनी सांसारिक सेवकाई में इसका प्रयोग किया? हाँ। हमेशा? नहीं।

क्या अब वह अपनी उच्च अवस्था में वापस आने का समय जानता है? निश्चित रूप से, वह जानता है। तो, एक ही व्यक्ति सर्वज्ञ और अज्ञानी दोनों है। हम पूरी तरह से समझ नहीं सकते।

या वह सर्वशक्तिमान है, और जब वे उसे गिरफ्तार करने आते हैं, तो वह कहता है, मैं हूँ और जो लोग उसके पीछे आ रहे हैं उन्हें गिरा देता है। और फिर भी वह क्रूस पर कमजोरी में मर जाता है। और फिर भी वह क्रूस पर ताकत के साथ मरता है, एक चिल्लाहट के साथ, यह कहते हुए कि वह काम पूरा हो गया है, जिसे पूरा करने के लिए वह आया था।

ईसाई धर्म के दो महान रहस्य हैं त्रिदेव का सिद्धांत और मसीह के व्यक्तित्व का सिद्धांत, जो दो स्वभावों वाला एक व्यक्ति है। तीसरा रहस्य जो हममें से बहुतों के बीच साझा है, जो सुधारित उद्धारशास्त्र को समझना चाहते हैं, वह पहले दो जितना महत्वपूर्ण नहीं है। पहले दो रहस्य ईसाई धर्म के लिए आवश्यक हैं।

यह नहीं है। लेकिन मेरी समझ से यह उतना महत्वपूर्ण नहीं है, ज़रूरी नहीं है, लेकिन यह उतना ही रहस्यमय है कि कैसे ईश्वर अपनी रचना और उद्धार और पूर्णता में पूरी तरह से संप्रभु है, और फिर भी मनुष्य उसी समय इस महान ईश्वर के प्रति उत्तरदायी हैं। मैं इसे समझाने के लिए संगतवाद से अपील करूँगा, लेकिन यह दूसरे पाठ्यक्रम का समय है।

इस प्रकार मैं व्यक्तिगत रूप से तीन रहस्यों में विश्वास करता हूँ, जैसा कि सुधारवादी धर्मशास्त्री करते हैं, लेकिन ईश्वर की संप्रभुता और मानवीय स्वतंत्रता के बीच इस गतिशील पूरकता के बीच इस रहस्य को निश्चित रूप से एक छोटा रहस्य मानूँगा और चर्च के दो आवश्यक रहस्यों में से एक नहीं। वे हैं त्रिदेव और मसीह के व्यक्तित्व की दो प्रकृतियाँ। व्यवस्थित धर्मशास्त्र मेरा अनुशासन है और यह पाठ्यक्रम अंततः इसी के बारे में है।

यह बाइबल के सावधानीपूर्वक अध्ययन पर आधारित है, इसलिए व्याख्यात्मक धर्मशास्त्र। यह बाइबल की कहानी का अध्ययन करने पर आधारित है, जैसे-जैसे यह सामने आती है, बाइबल धर्मशास्त्र। यहाँ पहले दो दिनों के व्याख्यानों की सबसे अधिक सामग्री, पहले शुरुआती व्याख्यान, ऐतिहासिक धर्मशास्त्र पर होने जा रहे हैं, जो सदियों से बाइबल के बाहर बाइबल की

शिक्षाओं को समझने के लिए चर्च के प्रयासों को सफलताओं और असफलताओं के माध्यम से समझने की कोशिश कर रहा है।

उदाहरण के लिए, क्राइस्टोलॉजी के लिए शुरुआती पाखंडों को समझना निश्चित रूप से महत्वपूर्ण है, क्योंकि उनमें से कुछ आज भी विधर्मी समूहों द्वारा दोहराए जाते हैं। व्यवस्थित धर्मशास्त्र हमारा मित्र है। जैसा कि इसके नाम से ही पता चलता है, यह व्यवस्थित करता है।

यह हमें समझने में मदद करने के लिए चीजों को एक साथ रखता है, और फिर भी, उसी समय, इसमें अंतर्निहित कमजोरियाँ हैं। एक के लिए, यह उन चीजों को अलग करता है जिन्हें भगवान ने एक साथ रखा है। मैंने मसीह के कार्य पर 20 घंटे का औपचारिक पाठ्यक्रम किया, और मैं वही बात कहूँगा जो मैंने तब कही थी।

फिर मैंने कहा, हम उनके उद्धार कार्य का अध्ययन कर रहे हैं, लेकिन हम मान रहे हैं कि वे एक अद्भुत व्यक्ति हैं क्योंकि वे बाइबल में अविभाज्य हैं। अब हम मसीह के व्यक्तित्व, या क्राइस्टोलॉजी का अध्ययन कर रहे हैं, और मैं इसे दूसरी दिशा में कहूँगा। वही अंश, वे बड़े चार जिनका मैंने उल्लेख किया, चार में से तीन, स्पष्ट रूप से उनके उद्धार कार्य का उल्लेख करते हैं।

यूहन्ना 1 में ऐसा नहीं है, कम से कम 1:1 से 18 तक। कुछ आयतों के बाद, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने यीशु को परमेश्वर का मेम्रा कहा है, जो संसार के पापों को दूर ले जाता है, जो पवित्रशास्त्र में मसीह की मृत्यु के बलिदानी याजकीय भाव को दर्शाता है। लेकिन निश्चित रूप से, कुलुस्सियों 1 में मसीह की मृत्यु को मेलमिलाप के रूप में बताया गया है।

फिलिप्पियों 2 में उनकी मृत्यु का उल्लेख उनके अपमान की स्थिति के संदर्भ में किया गया है, और इब्रानियों 1 पद 3, इसी तरह, इब्रानियों की पुस्तक के एक बड़े विषय का परिचय देता है, जिसे पहले अध्याय में विस्तृत रूप से नहीं बताया गया है, बल्कि उसके बलिदान के बारे में बताया गया है, जब यह कहा गया है कि उसने शुद्धिकरण किया। पापों के लिए शुद्धिकरण करने के बाद, वह ऊँचे स्थान पर महामहिम के दाहिने हाथ पर बैठ गया। इसलिए, व्यवस्थित धर्मशास्त्र चीजों को अलग करने के लिए क्षमा नहीं करता है ताकि हम उन्हें समझ सकें, लेकिन हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि हमने जो कुछ भी कृत्रिम रूप से और, उम्मीद है, मसीह के व्यक्तित्व और कार्य को समझने के लिए सहायक रूप से अलग किया है, उसे वापस एक साथ रखना चाहिए, जैसा कि हम उन अंशों में देखेंगे जो उनके व्यक्तित्व को अद्भुत, सबसे स्पष्ट और शक्तिशाली रूप से चित्रित करते हैं।

ऐतिहासिक धर्मशास्त्र शुरू करने से पहले ही मैं यह बताना चाहता हूँ कि इन अवधारणाओं को शुरू से ही हमारे दिमाग में बिठाने के लिए, चर्च का धर्मशास्त्र विवादास्पद है, खास तौर पर इसके कुछ पहलुओं में। यह यहाँ सच है, और माफ़ कीजिए, अब मुझे अपनी जगह मिल गई है। मुझे खेद है। मैं थोड़ी देर में उस पर वापस आऊँगा, लेकिन अभी के लिए, किताबें।

पिछले कुछ सालों में मुझे कई किताबें मददगार लगी हैं। हाल ही में मुझे कुछ किताबें सबसे ज़्यादा मददगार लगीं। क्लास रूनिया, *द प्रेजेंट डे क्रिस्टोलॉजिकल डिबेट*, एक ठोस यूरोपीय इंजीलवादी द्वारा लिखी गई, स्पष्ट, बहुत ज़्यादा अकादमिक नहीं, परोपकारी, सीधी-सादी।

डेविड वेल्स की *द पर्सन ऑफ़ क्राइस्ट* एक बहुत ही उपयोगी पुस्तक है, जिसमें उन्होंने उन विषयों पर अपनी विशिष्ट अंतर्दृष्टि दी है, जिनके बारे में वे लिखते हैं। डोनाल्ड मैकलियोड की *द पर्सन ऑफ़ क्राइस्ट* कई वर्षों तक मेरी पाठ्यपुस्तक रही, जिसमें सेमिनरी संदर्भ में क्राइस्टोलॉजी पढ़ाया जाता था। यह गेराल्ड ब्रे की कॉन्ट्रर्स ऑफ़ क्रिश्चियन थियोलॉजी, आईवीपी का हिस्सा है।

डोनाल्ड मैकलियोड, *द पर्सन ऑफ़ क्राइस्ट*, एक अद्भुत पुस्तक है। इसी तरह, हाल ही में, रॉबर्ट लेथम ने एक व्यवस्थित धर्मशास्त्र लिखा है जिसमें क्राइस्टोलॉजी बहुत अच्छी तरह से की गई है, और कुछ इंजीलवादियों के विपरीत, वह समकालीन क्राइस्टोलॉजी से सटीक और फिर भी रचनात्मक रूप से आलोचनात्मक तरीके से निपटता है। बॉब लेथम, *व्यवस्थित धर्मशास्त्र*।

मेरे मित्र स्टीफन वेलम की एक बहुत ही हालिया किताब है। वह लुइसविले में दक्षिणी बैपटिस्ट थियोलॉजिकल सेमिनरी में धर्मशास्त्र पढ़ाते हैं। स्टीव एक बहुत ही प्रतिभाशाली व्यक्ति हैं, और उन्होंने हमें *गॉड द सन इन्कार्नेट नामक एक पुस्तक दी है*, जो जॉन फीनबर्ग की फाउंडेशन ऑफ़ इवेंजेलिकल थियोलॉजी श्रृंखला का हिस्सा है; और यह एक मजबूत किताब है, जो बाइबल, ऐतिहासिक धर्मशास्त्र, व्यवस्थित विज्ञान के संदर्भ में बहुत अच्छी तरह से तैयार की गई है।

वह व्यावहारिक केनोसिस की वर्तमान समय की इंजील शिक्षा को संबोधित करने में भी समकालीन है, जिसका स्टीव कड़ा विरोध करते हैं। अच्छे लोग इसे सिखा रहे हैं, और मैं उस विरोध में उनके खेमे में शामिल होऊंगा। वे कहते हैं कि यीशु के पास अपनी सारी दिव्य शक्तियाँ हैं, लेकिन वह उनका कभी उपयोग नहीं करता, जो स्टीव को एक व्यावहारिक केनोसिस लगता है, और मैं इस पर उनसे सहमत हूँ। मैंने जिस आखिरी किताब का उल्लेख किया है, वह बस शानदार और बेहतरीन है जिसका उल्लेख नहीं किया जा सकता।

मैं यहाँ मज़ाकिया अंदाज़ में बात कर रहा हूँ। यह एक ऐसी किताब है जिसका मैंने सह-संपादन किया है। मैं बस मज़ाकिया बनने की कोशिश कर रहा हूँ।

मुझे लगता है कि मैंने काम नहीं किया, लेकिन यह ठीक है। क्रिस्टोफर मॉर्गन और मैंने मसीह के ईश्वरत्व पर एक पुस्तक का सह-संपादन किया, जो हमारी धर्मशास्त्र और समुदाय श्रृंखला का एक हिस्सा है, जिसमें, उन सभी पुस्तकों की तरह, हमारे पास बाइबिल के विद्वानों ने बाइबिल के विभिन्न भागों और मसीह के प्रति उनकी गवाही पर लिखा है और फिर हमारे पास एक ऐतिहासिक धर्मशास्त्री है जो मसीह के ईश्वरत्व पर एक अध्याय, व्यवस्थित धर्मशास्त्र और व्यावहारिक धर्मशास्त्र, सभी अलग-अलग पहलुओं, निबंधों को एक खंड में लिख रहा है। पुस्तक का नाम धर्मशास्त्र और समुदाय श्रृंखला में मसीह का ईश्वरत्व है।

क्राइस्टोलॉजी को वर्गीकृत करने के बारे में बात करने जा रहा हूँ। हम अभी भी यहाँ मामलों का परिचय दे रहे हैं। मैं चाहता हूँ कि आप महसूस करें कि हम ऐतिहासिक व्याख्याओं में कहाँ जा रहे हैं क्योंकि, वास्तव में, क्राइस्टोलॉजी को वर्गीकृत करने का आधार बहुत महत्वपूर्ण है।

वेल्स हमें बताते हैं कि धर्मशास्त्र एक या दो श्रेणियों में आते हैं। वे या तो ईश्वर के अस्तित्व और सृजित व्यवस्था के बीच असंततता के इर्द-गिर्द निर्मित होते हैं, या उनकी निरंतरता के इर्द-गिर्द। पहला ज्ञानोदय संस्कृति से आस्था के अलगाव को पहचानता है, और दूसरा इसे कम करता है।

यह निश्चित रूप से एक वर्गीकरण है जिसके कुछ अपवाद हैं, लेकिन कुल मिलाकर यह एक अच्छा अंतर है। असंततता पर निर्मित धर्मशास्त्र प्राकृतिक और अलौकिक के बीच के अंतर को स्वीकार करते हैं और एक तरह से या किसी अन्य तरीके से, अपने क्राइस्टोलॉजी को उस क्षेत्र में दिव्य के आक्रमण के रूप में प्रस्तुत करते हैं जो प्राकृतिक और निर्मित है। वे लगभग हमेशा उच्च क्राइस्टोलॉजी होते हैं, जो पुरानी शब्द-मांस भाषा का भी उपयोग कर सकते हैं।

मैं व्याख्यानों के विकास के साथ शब्द-मांस और शब्द-मनुष्य में अंतर करूंगा और जो मसीह की दिव्यता का एक कण भी नहीं देता है। उनका विश्वदृष्टिकोण चमत्कारों की उपस्थिति को आसानी से समायोजित करता है, और यह ईश्वरीय रूप से आरंभ किए गए रहस्योद्घाटन की आवश्यकता की पुष्टि करता है। निरंतरता पर जोर देने वाले धर्मशास्त्र तर्क देते हैं कि अलौकिक प्राकृतिक के भीतर प्रकट होता है, और इसलिए, चमत्कार, उद्घरण चिह्नों में, अक्सर प्राकृतिक कानून के कामकाज के बराबर होते हैं।

जिनके पास देखने की आंखें हैं, उनके लिए एक सुंदर सूर्यास्त या वसंत में प्रकृति का पुनर्जन्म चमत्कार है, जबकि जिनके पास देखने की आंखें नहीं हैं, उनके लिए सूर्यास्त और वसंत का समय बस सूर्यास्त और वसंत का समय है। क्योंकि मानव प्रकृति को केवल दिव्य के एक प्राकृतिक ग्रहण के रूप में देखा जाता है और दिव्य के साथ संचार किया जाता है, इसलिए मानवीय अंतर्दृष्टि को अक्सर दिव्य रहस्योद्घाटन का साधन माना जाता है। इसलिए, बाइबिल के हेर्मेनेयुटिक्स में, व्याख्याकार अक्सर रहस्योद्घाटन देने के हित में पाठ के नियंत्रण से स्वायत्तता ग्रहण करेगा, जो समकालीन है।

यह रहस्योद्घाटन, मामले की प्रकृति में, आम तौर पर समाज में संचालन मानदंडों के अनुरूप है, या कम से कम इसके साथ संगत बनाया जा सकता है। यह बिल्कुल वही है जिसकी कोई अपेक्षा कर सकता है, क्योंकि ईश्वर और मानव प्रकृति, अलौकिक और प्राकृतिक के बीच कोई आध्यात्मिक या ज्ञानात्मक विच्छेद नहीं है। इस ढांचे में क्राइस्टोलॉजी, जो ईश्वर और निर्मित व्यवस्था के बीच निरंतरता के ढांचे में है, आम तौर पर यीशु को एक मौजूदा धार्मिक चेतना की पूर्णता के रूप में चित्रित करती है जो सभी या अधिकांश लोगों के लिए समान है।

ये क्राइस्टोलॉजी आमतौर पर शब्द मनुष्य पैटर्न में आते हैं, लेकिन एक ऐसा जिसमें महत्वपूर्ण चाल्सेडोनियन तत्व खो जाते हैं। वे क्राइस्टोलॉजी हैं जो नीचे से निर्मित होते हैं। वे आमतौर पर ऐतिहासिक यीशु के बारे में जो कुछ भी जाना जा सकता है, उससे शुरू होते हैं, और ईश्वरीय की कल्पना मानवीय सीमाओं के भीतर की जाती है।

यह, ज़ाहिर है, अक्सर दिव्य होने के बराबर होता है और इस प्रकार असाधारण अंतर्दृष्टि या गहन नैतिक चेतना के रूप में परिभाषित किया जाता है। मानव और दिव्य के बीच बहुत कम या कोई ठोस और व्यक्तिगत एकता नहीं है, बल्कि, बाद वाले का एक संचार पूर्व में हुआ है ताकि मानव

यीशु के भीतर एक वातावरण या आभा पैदा हो सके, जिससे यह कहा जा सके कि ईश्वर उसमें निवास करता है। असंततता के विषयों को स्पष्ट करने वाले धर्मशास्त्र अपने दृष्टिकोण में लगभग हमेशा चाल्सेडोनियन होते हैं।

आधुनिक बौद्धिक दुनिया को ऐसे संदर्भ के रूप में देखा जाता है जिसके भीतर इस क्राइस्टोलॉजी की पुष्टि की जानी चाहिए, लेकिन ऐसा नहीं है जिससे इस क्राइस्टोलॉजी को अपना कोई भी तत्व उधार लेना चाहिए। इस दृष्टिकोण के मुख्य प्रतिनिधि पारंपरिक रोमन कैथोलिकवाद, एंग्लो-कैथोलिकवाद, ग्रीक रूढ़िवादी, रूढ़िवादी प्रोटेस्टेंटवाद और नव-रूढ़िवाद के कुछ हिस्से होंगे। हम देखेंगे कि कार्ल बारथ चाल्सेडन के बहुत करीब है।

निरंतरता पर निर्मित धर्मशास्त्र चाल्सेडोनियन ढांचे के भीतर संशोधनों को स्वीकार करते हैं और आधुनिक दुनिया को न केवल संदर्भ प्रदान करने के रूप में देखते हैं, बल्कि उनके क्राइस्टोलॉजी के लिए स्रोत भी प्रदान करते हैं। इसका मतलब यह है कि चाल्सेडोनियन रूढ़िवाद में संशोधन की डिग्री सीधे अनुपात में भिन्न होगी कि किस हद तक आधुनिकता धर्मशास्त्रीय रूप से निर्णायक बन गई है। इस दृष्टिकोण के समर्थक पुराने प्रोटेस्टेंट उदारवाद में पाए जाते हैं, साथ ही लैंगडन गिलकी, एडवर्ड फ़ार्ले और गॉर्डन कॉफ़मैन जैसे लोगों में इसके वर्तमान पुनरुत्थान में, कैथोलिक आधुनिकता में, और कुछ वेटिकन ॥ कैथोलिक धर्मशास्त्र में, प्रक्रिया विचार में, और कुछ मुक्ति धर्मशास्त्रों में।

यह विभाजन, जो 20वीं सदी में ईश्वर और सृजित व्यवस्था के बीच निरंतरता और असंततता के धर्मशास्त्रों के बीच स्पष्ट रूप से स्थापित और परिभाषित किया गया है, 19वीं सदी में बड़े पैमाने पर तैयार किया गया था, हालांकि यह 18वीं सदी में ज्ञानोदय का प्रत्यक्ष परिणाम है। ईश्वर और सृजित व्यवस्था के बीच निरंतरता या असंततता में क्राइस्टोलॉजी के इस महत्वपूर्ण वर्गीकरण के बारे में बात करने का एक और तरीका है, और यह शब्दजाल में अधिक लोकप्रिय है, और मुझे दोनों तरीके पसंद हैं, ऊपर से और नीचे से क्राइस्टोलॉजी के बारे में बात करना। ऊपर से क्राइस्टोलॉजी स्वर्ग में पिता और पवित्र आत्मा के साथ अनंत काल के लिए त्रिदेव के दूसरे व्यक्ति से शुरू होती है, है न? क्या आप मेरे साथ हैं? और फिर वे सिखाते हैं कि पुत्र नीचे आया, आप ऊपर से शुरू करते हैं, वह नासरत के यीशु में अवतरित हुआ, ठीक है? यही प्रारंभिक चर्च का दृष्टिकोण था।

यही सुधारकों का दृष्टिकोण था। यही प्यूरिटन का दृष्टिकोण था। यही जॉन, पॉल और इब्रानियों के सुसमाचार का दृष्टिकोण है।

नीचे से धर्मशास्त्र मनुष्य यीशु से शुरू होते हैं। ठीक है, अब मैं ऊपर से शुरू करने और नीचे से शुरू करने के बीच बिल्कुल और सापेक्ष रूप से अंतर करता हूँ, क्योंकि प्रसिद्ध जर्मन धर्मशास्त्री वोल्फहार्ट पैननबर्ग ने जानबूझकर नीचे से शुरू किया, शायद कार्ल बारथ के विपरीत, जिन्होंने पैननबर्ग की समझ में इतिहास को कुछ हद तक कम कर दिया। मुझे लगता है कि वह सही थे।

बारथ पुराने उदारवाद के खिलाफ प्रतिक्रिया कर रहे थे, जो ईश्वर और सृजित व्यवस्था के बीच निरंतरता का धर्मशास्त्र था, और उन्होंने असंततता पर ज़ोर दिया। ग्रेनज़ और ओल्सन की एक

अच्छी किताब है जिसका नाम है 20वीं सदी का धर्मशास्त्र, स्टेनली ग्रेनज़ और रोजर ओल्सन, और उनकी थीसिस, जो बहुत ज़्यादा है, यह है कि एक के बाद एक धर्मशास्त्र एक प्रतिक्रिया है, और वे या तो पारलौकिकता या आसन्नता पर ज़ोर देते हैं और आमतौर पर एक या दूसरे पर ज़्यादा ज़ोर देते हैं। इसमें बहुत सच्चाई है, हालाँकि शायद हर आंकड़ा उसमें ठीक से फिट नहीं बैठता, लेकिन बहुत कुछ है।

पुराने उदारवाद का प्रभाव इतना अधिक था कि प्रतिभाशाली जर्मन धर्मशास्त्री और प्रसिद्ध लोग एडोल्फ हिटलर की थर्ड रीच और जर्मन राष्ट्रवाद के ईश्वर के राज्य होने की शिक्षा से प्रभावित हो गए थे। यह आश्चर्यजनक है। नौ, बार्थ ने कहा, और उन्होंने और अन्य लोगों ने हिटलर की निंदा करते हुए बारमन घोषणापत्र पर हस्ताक्षर किए, कक्षा में हिटलर को सलामी देने से इनकार कर दिया, और इस तरह की बातें कीं।

यह हमारे लिए अकल्पनीय है कि वे महान जर्मन इससे बहक गए थे, लेकिन वे थे। वे थे। वे उदार थे, और वे निश्चित रूप से संस्कृति से बहक गए थे, लेकिन बार्थ ने उस उदार धर्मशास्त्र का प्रचार करने की कोशिश की जो उन्हें सिखाया गया था, और जैसा कि उन्होंने कहा, यह काम नहीं किया, और इसलिए उन्होंने बाइबिल की अजीब दुनिया की खोज की और उसका प्रचार किया, और परिणाम शानदार थे।

क्या मैं बार्थियन होने का दावा कर रहा हूँ? नहीं। क्या वह हर मामले में सही है? नहीं। क्या उसके शिष्य भी उतने ही रूढ़िवादी हैं जितने वह था? नहीं।

क्या वह हर मामले में रूढ़िवादी है? नहीं। क्या वह ताज़ी हवा का झोंका है? क्या वह अपने समय में एक नया नव-रूढ़िवाद लेकर आया? हाँ, जैसा कि हम देखेंगे जब हम उसके क्राइस्टोलॉजी का अध्ययन उसके स्वयं के लेखन से उद्धरणों के साथ करेंगे। बस स्पष्ट करने के लिए, समस्याएँ हैं।

धर्मग्रंथों का उनका उपयोग धर्मग्रंथों के बारे में उनके दृष्टिकोण से बेहतर है, और उनके विरोध के बावजूद, बाकी सभी को ऐसा लगता है कि उनका धर्मशास्त्र अंत में ईश्वर की कृपा की अंतिम विजय के साथ पूर्ण सार्वभौमिकता की ओर ले जाता है। ऊपर से धर्मशास्त्र, ऊपर से क्राइस्टोलॉजी। ऊपर से नीचे क्राइस्टोलॉजी।

ऊपर से क्राइस्टोलॉजी, नीचे से क्राइस्टोलॉजी। अगर आप बिल्कुल नीचे से शुरू करते हैं, तो आप कभी भी सत्य तक नहीं पहुँच पाएँगे, क्योंकि यह एक साधारण मनुष्य यीशु है। हालाँकि, पैननबर्ग ने हमें सिखाया है कि कोई व्यक्ति अपेक्षाकृत नीचे से शुरू कर सकता है।

यानी, यह विवाद या क्षमाप्रार्थी के संदर्भ में आपका आरंभिक बिंदु हो सकता है, समकालीन लोगों को प्रभावित करने के लिए आपकी प्रस्तुति। पैननबर्ग ने सोचा कि आज लोगों तक पहुँचने का यही एकमात्र तरीका है, खासकर उनके यूरोपीय संदर्भ में, और इसलिए वह मनुष्य यीशु से शुरू करते हैं, लेकिन वे स्पष्ट रूप से यीशु के मृतकों में से जी उठने की पुष्टि करते हैं, जो साबित करता है कि उनके लिए अंतिम आरंभिक बिंदु ऊपर से था, लेकिन यह असामान्य है। वैसे, ऊपर से शुरू करना भी अपनी समस्याओं के बिना नहीं है।

देखिए, यहीं से समस्याएँ आती हैं। यह एक रहस्य है। चर्च जो सबसे अच्छा कर सकता है, वह है रहस्य को स्वीकार करते हुए प्रतिज्ञान करना।

यह बहुत महत्वपूर्ण है। गलतियों की निंदा करें, ताकि आप मापदंडों के साथ समाप्त हो जाएं, है न? ऊपर से कुछ क्राइस्टोलॉजी कभी भी पूरी तरह से नीचे तक नहीं पहुंची। जैसा कि हम देखेंगे, प्रारंभिक चर्च को कभी-कभी यीशु की मानवता की पुष्टि करने में परेशानी होती थी, कुछ मामलों में तो बिल्कुल भी नहीं।

यह कितनी अलग दुनिया है। हमें यीशु सहित सभी की मानवता की पुष्टि करने, यीशु की मानवता की पूरी तरह से पुष्टि करने, या यह पुष्टि करने में कोई समस्या नहीं है कि यीशु की मानवता की हमारे उद्धार में कोई भूमिका है। इसलिए, यहाँ हर जगह त्रुटियाँ, संभावित त्रुटियाँ हैं, लेकिन निश्चित रूप से ऊपर से शुरू करने का पारंपरिक तरीका सही है, और बाइबल स्वयं ईश्वर और सृजित व्यवस्था के बीच एक विच्छेदन सिखाती है।

हालाँकि परमेश्वर का पुत्र अपने अवतार में सृजित व्यवस्था में प्रवेश करता है, वैसे, कोई यह कह सकता है कि मरकुस का सुसमाचार नीचे से शुरू होता है, जहाँ यीशु यहाँ-वहाँ जल्दी-जल्दी भागता है, तुरंत यह करता है, तुरंत वह करता है, तुरंत दुष्टात्माओं को निकालता है, सिखाता है, मदद करता है, चंगा करता है, इत्यादि। हालाँकि पूरी तरह से स्पष्ट होने के लिए, सबसे पहला श्लोक उसे परमेश्वर के पुत्र के रूप में बोलता है, जो मुझे ऊपर से आने की सूचना की तरह लगता है।

विवाद धर्मशास्त्र। ईसाई धर्मशास्त्र का अधिकांश हिस्सा विवाद धर्मशास्त्र है। यह है कि परमेश्वर ने सत्य को बढ़ावा देने, सत्य के महत्व को उजागर करने, चर्च को ना कहने के लिए मजबूर करने और फिर यथासंभव हाँ कहने के लिए संघर्ष करने के लिए त्रुटियों का उपयोग किया है।

क्राइस्टोलॉजी के मामले में भी यही बात थी, और हालाँकि हम इन बातों पर बाद में विस्तार से चर्चा करेंगे। अवलोकन। हमारे प्रभु के ईश्वरत्व पर हमले।

एबियोनिज्म एक यहूदी संप्रदाय था, जो संभवतः न्यू टेस्टामेंट में यहूदीकरण करने वालों की निरंतरता थी, जिन्होंने मसीह के ईश्वरत्व को पूरी तरह से नकार दिया था। वह ईश्वर नहीं है। लेकिन एक बहुत ही सूक्ष्म नकार, और एक ईसाई नकार, जो चर्च के भीतर है, एरियनिज्म था, जिसमें उन्होंने पुष्टि की कि यीशु पहले थे, कि पुत्र ईश्वर का पहला प्राणी था, जिसे फिर ईश्वर ने बनाया।

इसलिए, वह पुत्र की कुछ दिव्य गतिविधियों की पुष्टि कर रहा है, और फिर भी उसने ऐसी बातें कही जैसे कि एक समय था जब पुत्र नहीं था, और पुत्र पिता के समान सार नहीं है, जो कि पिता के साथ अंततः समान कहने का उनका तरीका है। चर्च ने न केवल एबियोनिज्म की, बल्कि एरियनिज्म की भी निंदा की। लेकिन एक संघर्ष था, और जैसा कि हम देखेंगे, रोमन साम्राज्य के सम्राट की राजनीतिक पसंद के आधार पर, एरियनिज्म को निकेया के बाद एक सदी तक सहन किया गया, जिसमें इसे माना जाता है कि इसे आराम दिया गया था।

और बेचारा अथानासियस, जो मसीह के ईश्वरत्व को थामे हुए एक बुलडॉग था, उसने कभी जाने नहीं दिया। पाँच बार, उसे अलेक्जेंड्रिया से निर्वासित किया गया। पाँच बार, सम्राट की पसंद के आधार पर।

वह अविचल क्यों था? उसका धर्मशास्त्र पूर्वी था, ठीक है, और इसलिए उसका उद्धार का सिद्धांत काफी हद तक, पूरी तरह से नहीं, लेकिन काफी हद तक देवत्व के संदर्भ में है। लेकिन इसे हमारे शब्दों में कहें तो, हमें बचाने में सक्षम होने के लिए, यीशु मसीह को भगवान होना था। अगर वह भगवान नहीं है, तो वह हमें नहीं बचा सकता।

मसीह के ईश्वरत्व के लिए उस उद्धारक तर्क ने अथानासियस को वास्तव में बहुत दृढ़ बना दिया। अंततः वह जीत गया, लेकिन यह वास्तव में विवाद धर्मशास्त्र था - मसीह की मानवता पर हमला।

पहले तो हम इन्हें उनके ईश्वरत्व के बारे में किए गए कार्यों जितना गंभीर नहीं मान सकते, लेकिन ये उतने ही गंभीर हैं। अगर उनका ईश्वरत्व महत्वपूर्ण है क्योंकि केवल ईश्वर ही हमें बचा सकता है, तो उनकी मानवता भी महत्वपूर्ण है क्योंकि केवल ईश्वर-मनुष्य ही हमें बचा सकता है। स्वर्ग में ईश्वर द्वारा प्रायश्चित नहीं किया गया था।

पृथ्वी पर परमेश्वर द्वारा प्रायश्चित किया गया। वह एक ही व्यक्ति में पूर्ण रूप से परमेश्वर और पूर्ण रूप से मनुष्य था। हमारी जगह हमारी मानव जाति में से एक की मृत्यु हुई।

वह कभी भी एक साधारण मनुष्य नहीं था, बल्कि ईश्वर-मनुष्य था जिसने कष्ट सहें और मर गया ताकि हम बच सकें। वह कई भाइयों में सबसे बड़ा है। वह हमारा अग्रदूत है।

वह प्रथम फल है। डोसेटिज्म एक दर्शन था। यह कोई समूह नहीं था।

डोसेटिस्टों का पहला चर्च या ऐसा कुछ नहीं था, और डोसेओ या ऐसा कुछ नाम का कोई आदमी नहीं था। यह एक ग्रीक शब्द है। इसका अर्थ है सोचना, प्रतीत होना या प्रकट होना, और ग्नोस्टिसिज्म के विभिन्न विचित्र रूपों में डोसेटिज्म आम था।

मसीह एक प्रेत था। इस पर यकीन करना मुश्किल है, है न? वह वास्तव में एक इंसान नहीं था। उनके एक नारे के अनुसार, वह एक भगवान था जो धरती के ऊपर घूमता था।

वह धरती के ऊपर चला गया। नहीं, वह एक ईश्वर-मनुष्य था और धरती पर बहुत चलता था और उसे क्रूस पर कीलों से ठोका गया और वह हमारे जैसे पापियों के लिए मर गया और तीसरे दिन फिर से जी उठा। वैसे भी, यह एक और सीधा हमला था, ठीक वैसे ही जैसे मसीह के ईश्वरत्व पर एबियोनाइट हमला था।

डोसेटिज्म सामने था। जैसा कि हम देखेंगे, ग्नोस्टिसिज्म बहुत शक्तिशाली था, और चर्च को अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करना पड़ा क्योंकि ग्नोस्टिसिज्म दूसरी शताब्दी की दार्शनिक धाराओं से बहुत जुड़ा हुआ था। मेरे पास एक प्रोफेसर के लिए एक खरीद थी जिसने कहा कि यदि आप

दूसरी शताब्दी के समय कैप्सूल में वापस जा सकते हैं, तो संभवतः ईसाइयों की तुलना में अधिक ग्नोस्टिक्स थे।

डरावना। अपोलिनेरियनवाद मसीह की मानवता पर एक और हमला है, जो बहुत अधिक सूक्ष्म है। यह मानता है कि ईश्वर मनुष्य बन गया, लेकिन यह जॉन 1:14 को, मैं कहूंगा, अत्यधिक शाब्दिक रूप से लेता है।

शब्द देहधारी हुआ। बेटे ने मानव शरीर तो लिया, लेकिन मानव आत्मा नहीं। ओह, लेकिन एक मिनट रुकिए।

यूनानी मनोविज्ञान में, मनुष्य के पास एक शरीर था, और उनके पास एक सजीव सिद्धांत था जो उन्हें जीवन, विचार और दिशा देता था। अपोलिनेरियनवाद में, शब्द, लोगो ने मनुष्य यीशु में आत्मा की जगह ले ली। क्या वह पूरी तरह से मनुष्य है? चर्च ने अंततः कहा, नहीं, नहीं, यह पूर्ण मानवता नहीं है।

और यह गलत है। बाद में, कैप्पाडोसियन फादर में से एक ने कहा कि जो ग्रहण नहीं किया जाता है उसे बचाया या ठीक नहीं किया जा सकता है। यह शानदार है।

उसने हमें शरीर और आत्मा से बचाया। वह शरीर और आत्मा बन गया। अपोलिनेरियनवाद आंशिक अवतार की शिक्षा देता है।

एकरूपता पर भी गलत हमला था। तथ्य यह है कि वह दो स्वभावों वाला एक व्यक्ति है। एक बार फिर, यहाँ अवतार में एक रहस्य है, और त्रुटियाँ एक तरफ से दूसरी तरफ गिरती हैं।

यूटीचियनवाद, यूटीचीज़ के नाम पर, या मोनोफ़िज़िज़्म एक और नाम है, एक प्रकृति। मोनोफ़िज़िज़्म का यही मतलब है। एक प्रकृतिवाद, अगर आप चाहें तो।

यह एक भ्रामक शिक्षा है, लेकिन इसने मसीह के व्यक्तित्व में दो स्वभावों के बीच अंतर को नकार दिया। आखिरकार, उनका स्वभाव एक ही था। बहुत भ्रामक।

दूसरी ओर, नेस्टोरियनवाद ने मसीह को दो भागों में विभाजित किया। कम से कम, नेस्टोरियस के विरोधी सिरिल को तो ऐसा ही लगा। और चर्च भी उससे सहमत था।

और नेस्टोरियस और नेस्टोरियनवाद की निंदा की गई। नहीं, कोई संकर मसीह नहीं है, यूतुकीस। वह न तो ईश्वर है और न ही मनुष्य, बल्कि कुछ और है।

लेकिन शायद सिर्फ़ वही ईश्वर है जिसकी मानवता उसके देवता में समाहित हो। यह सही नहीं है। और न ही वह दो व्यक्ति हैं।

नहीं, वह दो स्वभाव वाला एक व्यक्ति है। हम रहस्य को पूरी तरह से नहीं समझते हैं, लेकिन हम इसकी घोषणा करते हैं और त्रुटियों की निंदा करके इसकी रक्षा करते हैं। अंत में, अवतार पर हमले।

गोद लेने की प्रथा नामक एक त्रुटि, जिसका गोद लेने के बारे में बाइबल की शिक्षा से कोई लेना-देना नहीं है, कहती है कि एक आदमी था, यीशु, और भगवान ने उसे गोद लिया और उसे बिना किसी माप के पवित्र आत्मा दिया। और यही तथाकथित अवतार है। यह कोई अवतार नहीं है।

अवतार के अलावा कोई मनुष्य, यीशु, नहीं है। मरियम के गर्भ में गर्भधारण से पहले मसीह की कोई मानवता नहीं थी। ईश्वर किसी मनुष्य के अंदर आकर वास नहीं कर सकता।

भगवान ने एक इंसान को, अगर आप कहें तो, वर्जिन के गर्भ में अलौकिक रूप से बनाया। मैं यह बात सावधानी से कहना चाहता हूँ। मेरी वास्तव में उसकी माँ थी।

उसने यीशु की मानवता में योगदान दिया, जो कि माताएँ अपने बच्चों में योगदान देती हैं। उसका डीएनए, उसके गुणसूत्र, यीशु के रक्त और शरीर में थे।

केनोनिज्म अवतार पर हमला करने वाली एक और त्रुटि है। केनोसिस एक ग्रीक शब्द है, या कानाओ फिलिप्पियों अध्याय 2 में इस्तेमाल की गई क्रिया है। उसने खुद को खाली कर दिया, और हम बाद में इस पर और अधिक विस्तार से अध्ययन करेंगे, लेकिन धारणा यह है कि परमेश्वर के पुत्र के पास सभी दिव्य गुण थे, लेकिन जब वह एक इंसान बन गया तो उसने उनमें से कुछ को त्याग दिया। उसने खुद को अपनी दिव्यता के पहलुओं से खाली कर दिया। यह गलत है, और रूढ़िवादियों ने स्वीकार किया है कि वह एक व्यक्ति में पूरी तरह से परमेश्वर और पूरी तरह से मनुष्य है, हमेशा उन गुणों का उपयोग नहीं करता है, उन्हें केवल पिता की इच्छा में उपयोग करता है, लेकिन फिर भी उन्हें धारण करता है।

वास्तव में, ये सभी चीजें अधिक जटिल हैं। मैं आपको बस एक उदाहरण देना चाहता हूँ और अब ग्रे मैटर में चल रही चीजों को बताना चाहता हूँ जो बाद में उनके ऐतिहासिक संदर्भ में स्पष्ट होंगी, और आप उन्हें बेहतर ढंग से समझ पाएँगे। एक बार फिर, इंजील ईसाई आज एक व्यावहारिक ज्ञान सिखा रहे हैं, यीशु कहते हुए, वे सही कह रहे हैं, यीशु ने पवित्र आत्मा द्वारा चमत्कार किए।

यह सच है। फिर वे गलत तरीके से कहते हैं कि उसने केवल पवित्र आत्मा के द्वारा ही चमत्कार किए। यह सच नहीं है।

क्या यह पाखंड है? क्या यह एक निंदनीय सिद्धांत है? नहीं, लेकिन यह गलत सिद्धांत है। मैं इस बिंदु पर अपने मित्र स्टीफन विलेम से सहमत हूँ। हमें अपना पहला व्याख्यान यहीं समाप्त कर देना चाहिए, और मैं अगले घंटे में इसका परिचय दूंगा, हम पैट्रिस्टिक क्राइस्टोलॉजी पर चर्चा करेंगे।

सबसे पहले हम निकेया से पहले के विधर्मों का अध्ययन करेंगे। यहाँ हम फिर से विधर्मों के साथ हैं। यहूदी, राजशाही और ज्ञानवादी विधर्म।

उन्हें समझना महत्वपूर्ण है क्योंकि चर्च ने उनसे जूझा, और भगवान ने सत्य की ओर विवादास्पद धर्मशास्त्र का काम किया। फिर रूढ़िवाद, शहादत के रास्ते पर इग्राटियस का पता लगाना। उसने यीशु के बारे में अच्छी बातें कही।

जस्टिन शहीद, क्षमाप्रार्थी में से एक। इरेनियस, टर्तुलियन मूल। फिर नाइसिया और एरियनवाद की महान परिषद, वह पूरी बहस और लड़ाई और परिणाम, 325 नाइसिया।

निकिया और चाल्सेडोन के बीच विकास, साथ ही झूठे रास्तों में अपोलिनेरियनवाद, नेस्तोरियनवाद और मोनोफ़िज़िटिज़्म शामिल हैं। आप कहते हैं, बहुत सारे विधर्म हैं। यह ऐसा ही है।

यह सच है। फिर, 451 में चाल्सेडोन की महान परिषद, जिसमें इसके पंथ और उससे निकले पाँच आवश्यक सत्य शामिल हैं। आपके अच्छे ध्यान के लिए धन्यवाद।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन हैं जो क्राइस्टोलॉजी पर अपना व्याख्यान दे रहे हैं। यह सत्र 1, परिचय अवलोकन है।